आज़ादी का अमृत महोत्सव

DR. BHIM RAO AMBEDKAR COLLEGE

(University of Delhi)

Main Wazirabad Road, Yamuna Vihar, Delhi-110094, Phones: 22814126, Telefax: 22814747
Email: info@drbrambedkarcollege.ac.in; brambedkarcollege.du@gmail.com;
principal@drbrambedkarcollege.ac.in; www.drbrambedkarcollege.ac.in

drbrac @bhim_ambedkar brambedkarcollege DrBRAC DU DrBRAC DU

YEARS 1922-2022

Ref: BRAC/PO/Admin/2022-23/ Dated: 13.04.2023

प्रेस विज्ञप्ति

बाबा साहेब जैसे धैर्यवान न्याय पथ से विचलित नहीं होते: प्रो .आर. एन. दूबे

दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय का 17वां बाबा साहेब डॉ. भीमराव आम्बेडकर स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.आर.एन, दुबे ने कहा कि बाबा साहेब देश की एक ऐसी शख़्सियत हैं जिनकी तुलना किसी और से नहीं की जा सकती। समाज के वंचित वर्ग को सशक्त बनाने में उनकी केन्द्रीय भूमिका रही है। सामाजिक न्याय एवं समरसता को लेकर उनकी प्रतिबद्धता आजीवन बनी रही।

इस मौक़े पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और महाविद्यालय के संस्थापक प्राचार्य डॉ. प्रेमचंद पतंजलि ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के व्यक्तित्व के बारे में छात्रों को ज्ञान होना बेहद आवश्यक है। गांधी और आम्बेडकर के मतभेद पर जोर-शोर से बात तो की जाती है लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दोनों के बीच विचारों को लेकर मतभेद रहे हैं, मनभेद नहीं। दोनों ने एक-दूसरे की भूमिका और राष्ट्र निर्माण में योगदान को बेहतर ढंग से समझा। गांधीजी ने उनकी प्रतिभा, परिश्रम और समर्पण को ध्यान में रखते हुए उन्हें संविधान का प्रारूण तैयार करने वाले सबसे सुयोग्य व्यक्ति के तौर प्रस्तावित किया। बाबा साहेब दरअसल अंग्रेजों से मुक्ति के साथ-साथ बहुसंख्यकों की सामाजिक जकड़बंदियों से भी मुक्ति के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने मुक्ति की इस आवाज़ को बुलंद करने के क्रम में वर्ण-व्यवस्था पर सवाल खड़े किए और वो चाहते थे कि कांग्रेस- सभा में ऐसे सामाजिक मसलों पर भी बात हो। आज की युवा पीढ़ी को यह बात रेखांकित करते हुए प्रेरणा लेनी चाहिए कि वो अपने समय के सबसे पढ़े-लिखे व्यक्ति रहे हैं। पढ़ाई हमारे लिए सबसे मजबूत औज़ार है।

बाबा साहेब आम्बेडकर के अवतरण दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित इस 17वें व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में मौज़ूद ओबीसी आयोग, दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. जगदीश यादव ने उन्हें वंचित समाज का उद्धारक बताया। डॉ. यादव ने बाबा साहेब के जीवन प्रसंगों को शामिल करते हुए कहा कि जितना कष्टप्रद और संघर्षपूर्ण जीवन उन्होंने जिया, वैसा किसी और ने नहीं। छुआछूत के दंश को झेलते हुए उन्होंने वंचित समाज को जो स्वर दिया, उसमें एक बेहतर कल और भारत की उम्मीद दिखाई देती है। यह हमारा कर्तव्य है कि उनके बताए रास्ते पर चलते हुए देश की एकता और अखंडता को बरक़रार रखें।

व्याख्यानमाला के अतिथि वक्ता डॉ.अश्विनी सिवाल, विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने जोर देकर कहा कि बाबा साहेब को सिर्फ वंचित समाज का उद्धारक बताया जाना उनकी भूमिका को कमतर करके देखना है। उन्होंने एक ऐसे समावेशी समाज का सपना देखा जिसमें कि सभी वर्गों के बीच समता, स्वतंत्रता एवं एकता का प्रसार हो सके। इस कोशिश में उन्होंने जितने कार्य स्त्री सशक्तिकरण को लेकर किए। उतने ही सामाजिक न्याग के प्रति भी सजग रहे. स्वप्नद्रष्टा बाबा साहेब से युवा पीढ़ी इस बात की प्रेरणा ले सकती है कि अपनी परिस्थितियों के आगे कभी घुटने नहीं टेकने चाहिए और उससे ऊपर उठकर अपने व्यक्तित्व निर्माण में सक्रिय रहना चाहिए।

अंत में कार्यक्रम-संयोजिका डॉ. मोनिका अहलावत ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सारगर्भित व्याख्यान एवं गरिमामय उपस्थिति के लिए अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया. कार्यक्रम के आयोजन में डॉ दिलजीत कौर, डॉ संजय शर्मा, डॉ नरेंद्र भारती, डॉ विनीत कुमार, डॉ बिजेंद्र कुमार, डॉ राकेश यादव, डॉ रामप्रकाश द्विवेदी, डॉ राजवीर वत्स, डॉ अंजली, डॉ जया वर्मा, डॉ सरला भारद्वाज, डॉ रविंद्र सिंह, डॉ मालिनी, डॉ संजय, डॉ संजीव, डॉ तुषार, डॉ नेहा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, गैर-शैक्षणिक महाविद्यालय सहयोगी एवं छात्र उपस्थित रहें।

मीडिया प्रभारी